भारतीय दर्शन में जैव चिकित्सकीय नीतिशास्त्रा : एक अनुप्रयुक्त दार्शनिक अनुशीलन

ओम प्रकाश प्रभाकर, तरूणेश्वर प्रसाद सिंह
शोध–छात्रा
विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्रा विभाग
बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्रपफरपुर
असिस्टेंट प्रोपफेसर
विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्रा विभाग
बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्रपफरपुर

भारतीय संस्कृति में चिकित्सक का काम करनेवाला अनिवार्य रूप से दार्शनिक होता है। भारत में दार्शनिक वही होता है जो संसार में चिकित्सक की भूमिका निभाता है। पाश्चात्य दर्शन में समकालीन युग के अस्तित्ववादी दार्शनिकों ने भी चिकित्सक और दार्शनिक में समानता को स्वीकार किया है। दार्शनिक चरित्त का स्वभाव होता है आरोग्य और शुभ की खोज करना, गम्भीर तथ्यों, परिस्थितियों का समाधन खोजना। इसीलिए प्रारम्भ में ही चरक संहिता ने आरोग्य को सुख और रोग को दुःख की संज्ञा दी है।

वर्तमान दार्शनिक, वैश्विक परिदृश्य में व्यावहारिक दर्शन या अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रा का बोलबाला है जिसमें दार्शनिकों का कार्य व्यावहारिक स्तर पर नैतिक समस्याओं का दार्शनिक हल खोजना है। अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रा ;।चचसपमक म्जीपबेद्ध को समस्या–आधरित नीतिशास्त्रा ;ब्म इंमक म्जीपबेद्ध या आरोग्य नीतिशास्त्रा ;भ्वेचपजंसपजल म्जीपबेद्ध की संज्ञा दी गई है। हम आदर्श, सदाचार, नैतिकता, अच्छाई, परोपकार, कल्याण आदि की जितनी भी बात कर लें, जब यु(, महामारी, अकाल, प्राकृतिक आपदा या कोई दुर्घटना होती है तो घायल की रक्षा करना मनुष्य जाति के समक्ष यक्ष नैतिक प्रश्न होता है। तड़पती मानवता की त्वरित रक्षा का दायित्व दर्शन और नीतिशास्त्रा का है। इसके बिना नैतिकता की कल्पना नहीं की जा सकती। अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रा ;।चचसपमक म्जीपबेद्ध भारतीय चिन्तन के दुःख, बन्ध्न से छुटकारा के मार्गों का समर्थन करते हुए जनहित में दुःखों से निवृति और सुखों के विस्तार को दर्शन का लक्ष्य मानता है।

आधुनिक विश्व में व्यावहारिक दर्शन और नीतिशास्त्रा ;।चचसपमक चैपसवेवचील ंदक म्जीपबेद्ध के तहत् जैव नैतिकता की धूम है जिसमें जीव विज्ञान एवं दवाइयों में हुई प्रगति तथा जटिलताओं का शमन किया जाता है एवं उनमें उत्पन्न विवादों का दार्शनिक अध्ययन किया

जाता है। जैव नैतिकता उन नैतिक प्रश्नों से जुड़ा हुआ है जो जीवविज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, औषधि, राजनीति, मानव तथा दर्शन क्षेत्रा में उठते हैं। जैव नैतिकता शब्द युनानी 'आयोस' ;जीवनद्ध और इथोस ;व्यवहारद्ध से बना है। 1927 में फ्रिट्ज जार द्वारा यह शब्द बनाया गया था। जानवरों पर किये जा रहे जैव–वैज्ञानिक शोधें को लेकर इन्होंने कई तर्कों और बहसों की शुरूआत की थी। जानवरों एवं पौधें के वैज्ञानिक उपयोग पर प्रकाश डालते हुए इन्होंने इसे जैव नैतिक अनिवार्यता कहकर सम्बोधित किया। 1970 में अमेरिकी बायोकेमिस्ट वान रेंसेलायर पॉटर ने भी जीव मण्डल की एकजुटता को शामिल करते हुए इस शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग किया। इस तरह इस क्षेत्रा में एक वैश्विक नैतिकता का जन्म हुआ और यह अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रा का एक नैतिक मुद्दा बना। मानव और पशु प्रजाति दोनों के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जैव विज्ञान, इकोलॉजी, औषधि और मानवीय मूल्यों के बीच एक नैतिक अनुशासन ही चिकित्सकीय नैतिकता ;डमकपबंस म्जीपबेद्धऔर जैव नैतिकता ;ठपव.म्जीपबेद्ध के नाम से जाना जाता है।

यद्यपि जैव नैतिकता के मुद्दों पर प्राचीन काल से ही धर्म, दर्शन और व्यवहार में कई विचार मिलते हैं जिनमें भारतीय आदर्श 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' जैसे आदर्श सार्वभौम और सर्वकालिक आदर्श है जो आज भी आरोग्य जगत् के लिए सर्वस्वीकृत मंत्रा है। बायोमेडिकल प्रयोगों में मानवीय मूल्यों की स्थापना ही जैव नैतिकता का मुख्य प्रयोजन है। 1960 के दशक में एंग्लोपफोन सोसायटी ने अंग प्रत्यारोपन तथा एण्ड ऑपफ लाईपफ केयर में तकनीकी प्रगतियों जैसे किडनी डायलिसिस एवं रेसपिरेटर्स आदि ने कई प्रश्न खड़े किये और रोगी के देखभाल की सीमा रेखा खींचने की कोशिश की। तार्किक वस्तुनिष्ठवाद और इनोटिविज्म के प्रभावों से दूर नैतिकता और व्यावहारिक समस्याओं में इसकी उपयोगिता को लेकर दार्शनिकों में स्वाभाविक जागरूकता देखी जा सकती है। इंग्लैण्ड के दार्शनिक आर.एन. हेयर सहित डैनियल काल्लाहान तथा मनोवैज्ञानिक विलर्ड गेलिन ने 'हेस्टिंग्स केन्द्र ;द इंस्टिच्युट ऑपफ सोसायटी, इथिक्स एण्ड लाइपफ सायंसेजद्ध एवं 1971 में जार्ज टाउन विश्वविद्यालय में स्थापित कैनेडी इंस्टिच्युट ऑपफ इथिक्स आदि कापफी चर्चित हुए। मुख्य रूप से जेम्स एपफ. चाइल्डेस एवं टॉम ब्युचैंप ने इस क्षे की प्रथम पाठ्य पुस्तक प्रकाशित किया जिसका नाम 'प्रिंसिपल ऑपफ बायोकेमिकल इथिक्स' था और

इसने नीतिशास्त्रा ;म्जीपबेद्ध के क्षेत्रा में एक व्यावहारिक ;।चचसपमक द्ध मुद्दा दिया और यह एक परिवर्तनकारी प्रयास साबित हुआ।

पिछले तीन–चार दशकों से जैव नैतिकता के विश्वव्यापी मुद्दों में कैरेन ऐन क्वीनलैन, नैन्सी कर्जन, तेरी शियावो आदि की मौत के अदालती मामलों ने दुनियाभर का ध्यान आकर्षित किया।

जैव नैतिकता की वकालत करने वालों में वाशिंगटन विश्वविद्यालय में अलजॉनसन, वरजिनिया विश्वविद्यालय में जॉन फ्रलेयर, ब्राउन विश्वविद्यालय में जैकोब एन0 अपेल, जॉन्स हॉपकिन्स में रूथ पफैडेव तथा पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय में आर्थन कैपलन आदि के नाम कापफी चर्चित रहे हैं। 1995 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने जैव नैतिकता पर राष्ट्रपति परिषद् की स्थापना की तो संयुक्त राज्य अमेरिका में इसे स्वीकृति प्रदान की गई। राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने भी इस क्षेत्रा में उचित या नैतिक सलाह लेने हेतु जैव नैतिकता परिषद् का ही सहारा लिया है।

अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रा ;।चचसपमक म्जीपबेद्ध में जैव नैतिकता का क्षेत्रा मानवीय स्वास्थ्य, जीवन और मृत्यु के व्यापक सन्दर्भों से जुड़ा है। जीवन की सीमाओं और बाध्यताओं पर नैतिक बहस ;जैसे गर्भपात, इच्छा–मृत्यु, रोगी–डॉक्टर सम्बन्ध्द्ध के विस्तार एवं हेल्थ केयर संसाध्नों ;अंग दान, प्रत्यारोपण, हेल्थ केयर रेशनिंगद्धआदि पर बहस तथा इन क्षेत्राों में नैतिक जागरूकता आज समय की मांग है। जीव विज्ञान एवं औषधि, चिकित्सा उपचार एवं तकनीकीगत नवोत्पादों के क्षेत्रा में संकीर्णता एवं उपेक्षा का समय अब बीत चुका है। जीवन में भय, दर्द और आघात को महसूस करने वाले जीवों की मदद उनका नैतिक अध्किार है तथा यह सामाजिक नैतिकता की सबसे ज्वलंत समस्या है। यह मानवीय गरिमा तथा पशु–पक्षियों सहित सम्पूर्ण जीवन की शु(ता के साथ बहुत गहरे में जुड़ा है।

चिकित्सा नैतिकता ;।चचसपमक म्जीपबेद्ध नीति–दर्शन का वह क्षेत्रा है जिसमें दवा के निर्माण, उपयोग और वितरण सहित रोगी, चिकित्सक तथा जैव प्राणी की सुरक्षा की समीक्षा और मूल्यांकन का दायित्व निहित है। इसमें नैदानिक समायोजन के व्यावहारिक अनुप्रयोग के साथ इतिहास–दर्शन, ध्र्म, कानून और चिकित्सा विज्ञान का समावेश है। आज की चिकित्सा–नैतिकता में व्यावसायिकता या पेशेवर नैतिकता का बोलबाला है जिसके कारण

इस क्षेत्रा में मानवता या कल्याणकारी नीतियों की नैतिकता में कमी आना एक अभिशाप है। जैव नैतिकता विज्ञान के दर्शन और जैव प्रौद्योगिकी के उलझे हुए मामलों के अतिरिक्त बहुत ही व्यापक रूप से कार्य करता है। चिकित्सा, नैतिकता, स्वास्थ्य सेवा, नर्सिंग नैतिकता आदि इसके क्षेत्रा में बहुत चर्चित है। प्रिंसटन विश्वविद्यालय के पीटर सिंगर, हेस्टिंग्स केन्द्र के डैनियल कैलहान तथा हावर्ड विश्वविद्यालय के डैनियल ब्रॉक जैसे दर्शन में प्रशिक्षित व्यक्ति, शिकागो विश्वविद्यालय के मार्क सेगलर, कॉमेल विश्वविद्यालय के जोसेपफ पिफन्स जैसे चिकित्सा–प्रशिक्षित क्लिनिशियन जैव–नैतिकतावादी, जैकोब अपेल एवं वेजली जे0 स्मिथ जैसे कानूनविद्, प्रफांसिस पफुकुयामा जैसे राजनैतिक अर्थशास्त्राी तथा जेम्स चाइल्ड्रेस जैसे कई धर्मशास्त्राी शामिल हैं। एक बार औपचारिक रूप से प्रशिक्षित दार्शनिकों के प्रभुत्व में आने के बाद यह क्षेत्रा आगे आकर बहुविषयक बन गया है। जैव नैतिकता पर विश्लेषणात्मक दर्शन का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है जबकि उपभोक्तावाद, व्यावसायिकता और संवेदनशून्यता ने इसे नैतिक मूल्यों, आदर्शों आदि से दूर कर दिया है जिसके भयावह परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं। इसलिए अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रा में जैव नैतिकता की कई अग्रणी पत्रिाकाएँ नैतिक जागरूकता का दायित्व संभाल रही हैं जैसे 'हेस्टिंग्स सेंटर रिपोर्ट', 'जर्नल ऑपफ डेडिकल इथिक्स' तथा 'कैंब्रिज क्वाटरली ऑपफ हेल्थकेयर इथिक्स' शामिल है।

जैव नैतिक मामलों की व्याख्या प्राचीन काल से ही विभिन्न धर्मों में अपने–अपने दृष्टिकोण से मिलती है। यहूदी, ईसाई, मुस्लिम आदि ने इन विषयों पर एक शास्त्रा मंडल विकसित किया और कुल मिलाकर पश्चिम की संस्कृति को छोड़कर जैव नैतिकता के मामले में अन्य संस्कृतियों और धर्मों में दर्शन तथा धर्म अलग नहीं है इसलिए यहाँ जैव नैतिकता मुद्दों पर एक जीवंत बहस दिखाई पड़ती है और बौ(धर्म में तो मुख्य प्रेरक ही जैव नैतिकता और चिकित्सा नीतिशास्त्रा है जो यथार्थवादी, तर्कबुि(परक, व्यावहारिक दृष्टिकोण है। भारत में वंदना–शिव हिन्दू परम्पराओं के हिमायती जैव नैतिकतावादी हैं जिनकी व्यावहारिक प्रासंगिकता है।

□□□

सन्दर्भ–सूची :

1. जेम ैचपतपज वद प्दकपंद चैपसवेवचीलए छण्टण् ठंदमतरमम

2. 'नीतिशास्त्रा : सि(ांत एवं प्रयोग', नित्यानंद मिश्र।

3. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्रा, एम0पी0 चौरसिया, मोतीलाल बनारसीदास।

4. थ्ंबजे वि प्दकपंद ब्नसजनतम दृ च्व्ब् डनतंसपउंकींअंद क्मउल टवसण्.8ए छमू ठींतजपलं ठववा ब्वतचवतंजपवदण

5. पिटर सिंगर, प्रैक्टिकल ऐथिक्स, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस ए– 2000

6. एथिक्स : थ्योरी एण्ड प्रैक्टिकल, जे0पी0 थिरॉक्स, ग्लेनको, 1982.

7. चिकित्सा चन्द्रोदय, बाबू हरिदास वैद्य, 'हरिदास एण्ड कम्पनी'।

□□□